SONAM BALA
(DEPT. OF GEOGRAPHY)
A.N.D. COLLEGE, SHAHPUR PATORY, SAMASTIPUR

30th MAY 2020
SATURDAY

FOR B.A. - 1 (Subs)
PAPER - 1, PHYSICAL & ECONOMIC GEOGRAPHY

LECTURE - 58

UNIT - 2 NORMAL CYCLE OF EROSION BY W.M. DAVIS - (2)

W.M. डेविस की सामान्य अपरदन चक्र संकल्पना - (2)

२) प्रक्रम या प्रक्रिया (Process) → जब किसी विशेष प्राकृतिक माध्यम से संरचना पर प्रभाव पड़ता है या प्रभाव पड़ने की संभावना होती है, तो ऐसी सारी विधि या व्यवस्था प्रक्रिया कहलाती है। स्थल के मूल रूप में परिवर्तन प्रक्रम के कारण ही होता है। प्रक्रिया का विकास जलवायु के अनुरूप होता है। भूआकृतियों के निरंतर विकास में प्रक्रिया का ही योगदान रहता है। प्रक्रिया के अंतर्गत संपूर्ण अनाच्छादन अर्थात अपरदन एवं अपक्षय साथ ही अपरदन के कारक नदी, भूमिगत जल, पवन, हिमानी एवं लहरें सभी शामिल हैं।

पृथ्वी की संरचना हर जगह एक-सी नहीं होती, इसमें चट्टानों के झुकाव, कठोरता, बनावट, आयु आदि के हिसाब से विविधता पाई जाती है। जलवायु के तत्वों (तापमान, आर्द्रता, वर्षण आदि) में परिवर्तन होने से प्रक्रियाएँ भूआकृतियों पर अपना प्रभाव डालने लगती हैं। अतः दो भूआकृतियों पर या दो क्षेत्रों की समान भूआकृतियों पर प्रक्रिया का प्रभाव अलग-अलग होगा, ठीक उसी प्रकार जैसे दो व्यक्तियों के लिखने की लिपि में अंतर होता है। किसी क्षेत्र के सतह के संरचना के कटाव के बाद या उस क्षेत्र के ही अन्य भाग में किसी भी दिशा या समय के अंतर पर संरचना में भिन्नता आने पर प्रक्रिया या प्रभाव एवं उसके काम करने का स्वभाव भी बदल सकता है। अतः प्रक्रिया सर्वप्रभावी क्रियाशील होते हुए भी अनेक प्रकार से प्रभावित होनेवाली व्यवस्था है। अतः प्रक्रिया को समझने

Scanned by CamScanner

के लिए प्रत्येक क्षेत्र की संरचना, उसका बदलता स्वरूप, वहाँ पर प्रभावित जलवायु एवं अनाच्छादन की व्यवस्था आदि को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है।

3) अवस्था (Stage) → किसी भी क्षेत्र की भूआकृति का विकास संरचना एवं प्रक्रिया के माध्यम से होता है। इसके फलस्वरूप भू-आकृति का जो नवीन रूप बनता है, जिस विधि द्वारा उनमें बदलाव होता है, उसकी पहचान एवं उनकी व्याख्या अवस्था के अंतर्गत आती है। प्रक्रिया कितना कार्य कर चुका है, इसका पता अवस्था से ही चलता है। अवस्था में मुख्यतः संरचना पर प्रक्रिया के द्वारा जो प्रभाव पड़ता है, उसे ही विभिन्न प्रकार से समझाया जाता है। डेविस ने अवस्था के क्रम को समझाने के लिए उसे 4 भागों में बाँटा है —

(i) बाल्यावस्था / प्रारंभिक
(ii) युवावस्था
(iii) प्रौढ़ावस्था
(iv) वृद्धावस्था

डेविस के विद्वानों ने बाल्यावस्था एवं युवावस्था को एक ही मान लिया। वर्तमान में मोटे तौर पर अवस्थाएँ तीन (युवा, प्रौढ़ एवं वृद्ध) बतायी गई हैं, किंतु प्रौढ़ अवस्था को लंबी होने से ~~इस~~ पूर्व - प्रौढ़ावस्था एवं उत्तर - प्रौढ़ावस्था में बाँट दिया गया है। प्रत्येक अवस्था के अपने-अपने लक्षण होते हैं। बाल्यावस्था में भू-आकृति नवीन होने से ऊँची-नीची होते हुए भी कम लक्षणों वाली होती है। युवावस्था में सूखे प्रदेश में तेजी से विकास होने से वहाँ गहरी घाटियाँ, घुमावदार नदी-घाटियाँ, तेज ढाल, झरने व झीलें, अन्य शुष्क प्रदेशों में बजादा, बालू के टीले, पथरीली आकृतियाँ एवं विविध प्रकार के लक्षण भू-आकृति पर विकसित होते जाते हैं। इनमें जटिलापन या स्पष्टता अधिक होती है। डेविस के अनुसार, प्रारंभिक अवस्था में उत्थान की क्रिया कटाव की क्रिया से अधिक महत्वपूर्ण बनी रहती है, जबकि युवावस्था में अपरदन की क्रिया सबसे महत्वपूर्ण बनी रहती है।

Scanned by CamScanner